Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 7.384
Volume - 7, Issue - 11, November - 2024

DOIs:10.2018/SS/202411004 --:-- Research Paper / Article / Review

यमदीप एक आवाज किन्नरों की

Sanjay kumar Yadav
शोधार्थी, गुरुग्राम, हरियाणा
Email - sy203343@gmail.com

शोध सार : हमारा पूरा समाज दो स्तंभों पर खड़ा है: स्त्री और पुरुष। आदिम काल से ही दोनों का कार्य सामान्यतः एक दूसरे के सहयोग से जीवन व्यतीत करना और बच्चों को जन्म देकर मानव जाति को आगे बढ़ाना समझा जाता है। परंतु मानव समाज में इन दो लिंगों के अतिरिक्त एक अन्य लिंग भी मौजूद है, जो न तो स्त्री है और न ही पुरुष। न पूर्ण पुरुष होने के कारण यह न तो संबंध बना सकते हैं और न ही गर्भधारण कर सकते हैं। समाज में इन वर्ग के लोगों को "हिजड़ा" नाम दिया गया है, और सदियों से इन्हें समाज से अलग रखा गया है।

जैसा कि साहित्य समाज का ही दर्पण होता है और समाज में हो रही घटनाओं को साहित्य में चित्रित किया जाता है, इसी कारण वश समाज से उपेक्षित पात्रों को साहित्य में भी उपेक्षित रखा गया। परंतु आज 21वीं सदी में हिंदी साहित्य अपना ध्यान स्त्री विमर्श और दलित विमर्श जैसे विषयों के साथ किन्नर विमर्श पर भी केंद्रित कर रहा है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए नीरजा माधव ने "यमदीप" उपन्यास लिखकर समूचे हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श का दरवाजा खोल दिया। "यमदीप" के माध्यम से उन्होंने इस समुदाय के विभिन्न प्रश्नों को आवाज दी और इसे समाज के समक्ष पूरी तरह से प्रस्तुत किया।

बीज शब्द : - अतिरिक्त, गर्भधारण, हिजड़ा, सदियों, विमर्श, किन्नर, अपेक्षित, बहिष्कृत, प्रकाशक ।

यमदीप एक आवाज किन्नरों की :

21वीं सदी के साहित्य की रचनाओं में सदियों से समाज और साहित्य द्वारा उपेक्षित पीड़ित, बहिष्कृत किन्नर या तीसरे लिंग के समुदाय पर विचार-विमर्श तेज़ी से हुआ है। अगर हिंदी साहित्य की बात करें, तो हमें हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श का प्रारंभ 2002 के बाद देखने को मिलता है। 2002 में नीरजा माधव रचित उपन्यास *यमदीप* सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित होता है। इस उपन्यास के प्रकाशन के बाद ही हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श की शुरुआत मानी जाती है। इसके प्रकाशन के बाद ही लेखन का ध्यान किन्नर वर्ग पर केंद्रित हुआ।

यमदीप के संदर्भ में प्रकाशक ने एक दिन दुख व्यक्त करते हुए कहा था कि इस उपन्यास का विषय बिल्कुल साहित्य से अछूता होने के कारण उन्होंने *यमदीप* उपन्यास को एक शीर्षस्थ आलोचक से पढ़वाया था, लेकिन कई महीनों तक उनकी कोई प्रतिक्रिया नहीं आई।

यमदीप उपन्यास की विषयवस्तु हिजड़ा नाजबीबी के आसपास घूमती है, जो इस उपन्यास की नायिका है। कथा का आरंभ नाजबीबी यानी नंद रानी के जन्म से होता है। नाजबीबी का पहला नाम नंद रानी था। नंद रानी का किन्नर के रूप में जन्म लेते ही पिता फूट-फूट कर रोने लगते हैं और घर में मातम का माहौल छा जाता है। आगे वे इस बच्ची के पालन-पोषण का निर्णय लेते हैं, परंतु यह बात राज ही रहती है और किसी के सामने नहीं आती। इसलिए वे भरसक

प्रयास करते हैं कि नंद रानी से जुड़ी बातों का किसी को पता न चले। नंद रानी से उसकी मां बहुत अधिक प्यार करती है, और वह पढ़ाई में भी सभी से आगे, अर्थात तेज़ थी। परंतु आठवीं कक्षा में पढ़ते हुए कुदरत अपना करिश्मा दिखाती है और नंद रानी के स्त्रीय शरीर में दाढ़ी-मूंछें उग आती हैं। यह सब देखकर समाज उस पर हंसने लगता है। समाज के भय से परेशान होकर माता-पिता सोचने लगते हैं कि अब क्या करें। समाज द्वारा हो रहे अपमान और पारिवारिक प्रताड़ना को नंद रानी सह नहीं पाई और सदा के लिए हिजड़ों की बस्ती में चली गई। यहाँ वह नंद रानी से नाजबीबी बन गई और नर्क समान संसार में अपना जीवन व्यतीत करने को विवश हो गई।

अगर परिवार द्वारा नंद रानी को संरक्षण मिलता और समाज द्वारा उसकी अवहेलना नहीं होती, तो वह किन्नर की इस गंदी बस्ती में आकर जीने से बच सकती थी। लेकिन परिवार और समाज की संवेदनहीनता के कारण एक होशियार और होनहार बच्ची का जीवन समाज और परिवार की आँखों के सामने बर्बाद हो गया।

नंद रानी द्वारा घर त्याग करते समय उसकी मनोदशा का चित्रण करते हुए लेखिका ने लिखा -

"पर उस दिन के बाद वह दृढ़ और विवश-सी होने लगी थी, जब नंदिनी दीदी की कई शादियाँ केवल नंद रानी के कारण टूटने लगीं। नंदन भइया के उस दिन के क्रोध और घृणा ने नंद रानी को एक झटके में वही निर्णय लेने को विवश कर दिया था, जिसे सोच-सोचकर उसका हृदय दहल जाता था।"1

हिजड़ों की दुनिया में बुजुर्ग व्यक्ति उनके गुरु होते हैं। इस उपन्यास में नाजबीबी के गुरु का नाम मेहताब गुरु है। जब नंदरानी के माता-पिता उसे अपने पास रखकर पढ़ा-लिखा कर अपने पैरों पर खड़ा करने की बात करते हैं, तब मेहताब गुरु एक प्रश्न उठाते हैं:

"माताजी, किसी स्कूल में आज तक हिजड़ों को पढ़ते-लिखते देखा है? किसी कुर्सी पर हिजड़ा बैठा है? पुलिस में, मास्टरी में, कलेक्टरी में किसी में भी? अरे, इसकी दुनिया यही है, माताजी। कोई आगे नहीं आएगा कि हिजड़ों को पढ़ाओ, लिखाओ, नौकरी दो, जैसे कुछ जातियों के लिए सरकार करती है।"2

गुरु महताब के इन प्रश्नों को सुनकर ऐसा लगता है कि इस प्रश्न के माध्यम से लेखिका सरकार से कुछ महत्वपूर्ण सवाल पूछना चाहती हैं, जिनका उत्तर शायद सरकार और देश के बुद्धिजीवियों के पास भी नहीं है। यह सवाल है कि ऐसा क्यों है कि किन्नर शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते? क्या ज्ञान और शिक्षा लिंग के आधार पर मिलती है? इसके साथ ही यह सवाल उठाया गया है कि समाज, घर-परिवार और परिवार के सदस्यों की संवेदनहीनता के बारे में भी विचार करना जरूरी है।जहां तक परिवार की बात आती है, अगर कोई बच्चा लंगड़ा, लूला, अंधा या अपाहिज जन्म लेता है, तो समाज और परिवार उस बच्चे को सामान्य बच्चों की तरह अपनाता है। उसके पालन-पोषण की जिम्मेदारी परिवार के साथ सरकार और कुछ गैर-सरकारी संस्थाएँ भी उठाती हैं, और भविष्य के लिए विभिन्न सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। लेकिन जिन बच्चों का जन्म जननांग विकार के साथ होता है, उनके प्रति किसी की कोई सहानुभूति नहीं होती। अगर कोई ध्यान देता भी है, तो नफरत की दृष्टि से। ऐसे बच्चों की अवहेलना की जाती है, जबकि उनका इसमें कोई दोष नहीं होता। यह उपन्यास इस सच्चाई से भी परिचित कराता है कि हमारा सभ्य समाज शारीरिक रूप से विकलांग बच्चों को तो अपनाता है, लेकिन जननांग दोष के साथ जन्मे बच्चों को अपनाने में संकोच करता है।

परिवार और समाज द्वारा उपेक्षित होने के बावजूद भी किन्नरों में अपने परिवार के प्रति विशेष सहानुभूति होती है। वे अपने माता-पिता की सेवा करना चाहते हैं और उनके साथ अपने खुशियों के पल व्यतीत करना चाहते हैं। वे आगे पढ़-लिखकर अपने जीवन में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करना चाहते हैं। लेकिन दुर्भाग्यवश, माता-पिता उन्हें अपने पास नहीं रख पाते और किन्नर अपनी इच्छाओं को पूर्ण नहीं कर पाते।

अगर हम आज के समय की बात करें, तो परिवार में वृद्ध माता-पिता की स्थिति दिन-ब-दिन खराब होती जा रही है। जिन बच्चों को माता-पिता अपना वृद्धावस्था का सहारा समझकर पालन-पोषण करते हैं, वे ही बाद में उन्हें उपेक्षित करने लगते हैं। दूसरी ओर, तीसरे लिंग के व्यक्ति, जो किसी के प्रति उपेक्षा या द्वेष की भावना नहीं रखते, समाज और परिवार द्वारा उनसे दूर रहने पर विवश किए जाते हैं। फिर भी, वे अपने माता-पिता के साथ रहकर उनकी सेवा करना

चाहते हैं। इस उपन्यास में नाजबीबी भी अपने माता-पिता के प्रति चिंतित दिखाई देती है और हमेशा उनसे संपर्क में रहना चाहती है। लेकिन यह बात उसके भाई को बिल्कुल पसंद नहीं आती, और वह नाजबीबी को साफ शब्दों में कहता है:

"देखो, तुम्हारा बार-बार टेलीफोन करना या इस परिवार से संबंध रखना हमारी इज्जत तो बढ़ता नहीं, उल्टे तुम्हें भी दुख होता है और मम्मी-पापा को भी। तुम परिवार में रह नहीं सकती, हम तुम्हें रख भी नहीं सकते, इसलिए यह समझ लो कि तुम अनाथ हो, कोई नहीं तुम्हारा इस दुनिया में।"3

नाजबीबी का घर में आना-जाना भाई को अच्छा नहीं लगता, और अब वह माता-पिता से दूरी बनाने के लिए कहता है। पिता भी इन सब से विवश होकर उससे कह देते हैं:

"बेटा, तुम्हारे भैया का स्वभाव पहले जैसा नहीं है। भाभी भी उसी जैसी है, इसलिए टेलीफोन से बात कर लिया करो।" 4

माँ की मृत्यु के बाद जब नाजबीबी शमशान जाती है, तब लोग उसे हिजड़ा समझ कर उपेक्षापूर्ण नजरों से देखते हैं। घरवालों को भी शमशान में उसका आना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। इस प्रकार हमारा यह सभ्य समाज किन्नरों के घर का द्वार अपनी पूरी क्षमता से बंद कर देता है। इसलिए किन्नर के जीवन की कल्पना *यमदीप* से की गई है। दीपावली की पूर्व संध्या पर घर से बाहर कचरे के ढेर या सड़कों पर जलाए जाने वाले दीप को यमदीप कहते हैं। इस दीपक को जलाने वाला फिर कभी मुड़कर उसे नहीं देखता; उसे अकेला छोड़ देता है। यही स्थिति समाज में किन्नरों की होती है।

समाज की हर एक व्यवस्था से दूर, इस वर्ग को तिरस्कार के अलावा आर्थिक अभाव से भी जूझना पड़ता है। किन्नर हमारे समाज के हर घर के मांगलिक अवसरों पर नाच-गाकर आय अर्जित करते हैं और अपना जीवन निर्वाह करते हैं। इस आर्थिक उपार्जन के लिए भी किन्नरों के लिए एक निश्चित क्षेत्र निर्धारित होता है, जिसके भीतर ही उन्हें नाचने-गाने की अनुमति दी जाती है। यदि किसी कारणवश इन्हें दूसरी मंडली के क्षेत्र में जाना पड़ जाए, तो उस मंडली के किन्नर विरोध करते हैं। यहां तक कि हाथापाही की नौबत भी आ जाती है। इस परिदृश्य का सजीव चित्रण किया है।

आर्थिक अभाव के कारण नाजबीबी को सोना की शिक्षा की चिंता सताती है। वह कुछ पैसे कमाने के लिए अपने समूह के साथ दूसरी मंडली के क्षेत्र में जाने को विवश होती है, लेकिन वहां उसे चोट लग जाती है और वह घायल होकर लौटती है। यह बात वह अपने गुरु जी से छुपा नहीं पाती और उनसे बताती है:

“ये चोट गुरुजी, ये चोट खैरगल्ले के कारण लगी। सोच रही थी कि आपको हिस्सा देने आएंगे तो बता ही देंगे ।”5

अगर हम आधुनिकता के बढ़ते प्रभाव की बात करें, तो इसके कारण मनुष्य अपनी सामाजिक परंपराओं और सांस्कृतिक प्रवृत्तियों को भूलते जा रहे हैं। अब घरों में शुभ अवसरों पर किन्नरों का आना, नाचना-गाना और फिर पैसे देना लोगों को पसंद नहीं आता। इस कारण अब इस समुदाय के लोगों को आय अर्जित करने में कमी होने लगी है। कमाई में कमी के कारण उनका जीवन जीना मुश्किल हो गया है, और विवश होकर वे कुकर्म की ओर बढ़ने लगे हैं। इसका उल्लेख लेखिका ने भी किया है। जब मल्लू नामक पात्र सबीना के बारे में बताता है कि वह हमेशा नए-नए पुरुषों के साथ दिखती है, तो इस संदर्भ में नाजबीबी कहती है:

“**अब धंधा बारहों महीने एक जैसा तो नहीं रहता, शायद इसी मजबूरी में आप सबीना को ऐसा करते देखे होंगे। नहीं तो हम कोई इंसान तो नहीं, कि हमारे तन की आग हमें ऐसा करने को मजबूर करे, बस पेट की आग से।”6**

अतः इस प्रकार विवश होकर ये लोग जीवनयापन हेतु गलत तरीके अपनाने को मजबूर हो जाते हैं। किन्नरों को समाज की मुख्यधारा से अलग कर कुकर्म करने के लिए केवल विवश ही नहीं किया जाता, बल्कि उनके बारे में समाज में अफवाहें भी फैलायी जाती हैं। यह लेखिका अपने उपन्यास में बताती हैं और गुरु मेहताब इस बात को नकारते हैं कि किन्नर युवकों को बहला-फुसला कर उनका ऑपरेशन करके हिजड़ा बना देते हैं। गुरु मेहताब इस बात को नकारते हुए कहते हैं:

“हमारी बस्ती में जब भी कोई इंसान का पूत घुसता है, तो क्या हम उसे तुरंत ऑपरेशन कर देंगे, पकड़कर? डॉक्टरी खोले बैठे हैं इसी कोठारी में क्या? यह देखो, हमारा अंग कोई काटा है कि अल्लाह रसूल वैसे भेजा है?”7

उपन्यास के शुरू में ही हमें किन्नरों की मानवता का दर्शन होता है। नाजबीबी अपने किन्नर साथियों की मदद से एक प्रसव पीड़ा से तड़प रही पागल महिला को उसकी पीड़ा से राहत दिलवाती है। इस वक्त उन्हें देख रही स्त्रियों से मदद की अपील की जाती है, लेकिन वे सभी मुंह मोड़ लेती हैं। यह मानवता के ऊपर बहुत बड़ा कलंक है। पागल महिला की पीड़ा को देखकर किन्नरों को दुख होता है और दया आती है, लेकिन समाज को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। इस बारे में नाजबीबी मनुष्य जाति को कोसती है और कहती है:

"जब कोई पूछने आए, तो क्या हम भी छोड़ देंगे? अरे, हम हिजड़े हैं, हिजड़े इंसान हैं क्या, जो मुंह फेर लें?"8

इस प्रकार सभी किन्नर मिलकर उस पागल महिला का प्रसव कराते हैं, लेकिन महिला की मृत्यु हो जाती है और एक सुंदर बच्ची का जन्म होता है। नाजबीबी उस बच्ची को लेकर आसपास के सभी घरों में जाकर उसे पालने की अपील करती है, लेकिन कोई भी उसे अपनाने को तैयार नहीं होता। सब उसकी ओर से घृणा पूर्वक मुंह मोड़ लेते हैं। फिर भी, मानवता के भाव से परिपूर्ण नाजबीबी का हृदय उस बच्ची को छोड़ने का फैसला नहीं करता। वह इसे अपनी शरण में लेकर पालने का निर्णय लेती है। इस संदर्भ में नाजबीबी कहती हैं:

"किसके भरोसे छोड़े? यह बच्ची कोई पालने को तैयार नहीं है, ऐसे छोड़ देने पर कहीं कुत्ते और कौवे नोच न लें... नहीं, उसने बच्ची को सावधानी से थाम लिया|"9

इस प्रकार, नाजबीबी उस बच्ची को पालने का निर्णय लेती है। परंतु किन्नरों की बस्ती में बच्ची को पालना इतना आसान नहीं था, क्योंकि उसे चोरी किया हुआ बच्चा समझकर पुलिस द्वारा पकड़े जाने का भय था। फिर भी, वह बच्ची को घर ले आती है और गुरु के आदेश पर समूह के सभी किन्नर मानवता की भावना से परिपूर्ण होकर उस बच्ची के पालन-पोषण में नाजबीबी की मदद करते हैं। बच्ची का नाम सोना रखा जाता है और जब सोना बड़ी होकर विद्यालय जाने लगती है, तब नाजबीबी उसकी अच्छी तरह से देखभाल करती है।

किन्नर समुदाय के अलावा, उपन्यासकार ने समाज के अन्य पहलुओं पर भी प्रकाश डाला है, जैसे राजनीति में फैला भ्रष्टाचार, नारी शोषण, भारत और विश्व में वृद्धों की बिगड़ती स्थिति आदि।

राजनीति द्वारा देश और राज्य के विकास हेतु नियम बनाए जाते हैं, लेकिन आजकल के राजनेता कुचक्र में फंसकर केवल सत्ता की चाहत रखते हैं और सत्ता एवं गद्दी पाने के लिए भ्रष्टाचार का सहारा अपनाते हैं। इसे उपन्यासकार ने एक पात्र मन्नाबाबू के माध्यम से प्रस्तुत किया है। संतरवा को अपने रास्ते से हटाने के लिए मन्नाबाबू गहरी चाल चलता है और कहता है:

"मैं संतरवा को तोड़ना चाहता हूं, वह भी इस तरह कि सांप भी मर जाए और लाठी भी ना टूटे|"10

राजनीति के इस दृश्य को देखकर सवाल उठता है कि कैसे राजनीति के द्वारा समाज और विश्व के कल्याण की कामना की जा सकती है?

समाज में नारी उद्धार की कामना की जाती है और स्त्री के उद्धार हेतु अनेक पथ खोले गए हैं, लेकिन इसके बावजूद भी नारी शोषण का दर्शन होता है। यदि यह शोषण स्त्री द्वारा ही किया जा रहा हो, तो यह और भी चिंता का विषय बन जाता है। जब स्त्री स्त्री द्वारा ही सुरक्षित नहीं दिख रही है, तो यह समाज और व्यवस्था की विफलता को दिखाता है। उपन्यास की एक पात्र रीता देवी, जिसे उद्धारगृह में संरक्षिका के तौर पर चुना गया था, वास्तव में वहां रहने वाली बालिकाओं का देह व्यापार करवा रही है। लेखिका ने इस बात का उल्लेख इस प्रकार किया है:

"वो एक लड़की, जो वहां से भाग निकली थी, उसने बयान दिया कि वहां उन सब से गलत धंधा करवाया जाता है। बड़े-बड़े लोग रोज आते हैं, उनमें से किसी को छांटकर कहीं ले जाते हैं, और फिर पहुंचा देते हैं। जो लड़की विरोध करती है, उसे मारा पीटा जाता है, सिगरेट से जलाया जाता है|"11

समाज में फैल रहे एक और घिनौने दृश्य का चित्रण भी इस उपन्यास में किया गया है। वह व्यक्ति, जिसे समाज और परिवार पूजनीय समझता है, वह अब हाशिए पर जीवन व्यतीत करने को विवश हो गया है। वह अपने बच्चों के जन्म से लेकर उनके संघर्षों में उनका साथ देता है, लेकिन वही बच्चे वृद्धावस्था में उसे उपेक्षित और प्रताड़ित करते हैं। वृद्ध व्यक्तियों की खराब होती स्थिति का चित्रण उपन्यास में इस प्रकार किया गया है:

"इकलौता बेटा अपना परिवार लेकर मुंबई में बस गया था। बहू सास-ससुर की सेवा और खर्च उठाने को तैयार नहीं थी |"12

निष्कर्ष :

निष्कर्ष के रूप में यह स्पष्ट होता है कि किन्नरों को न केवल समाज में मानसिक और शारीरिक कष्ट सहने पड़ते हैं, बल्कि उनका जीवन आर्थिक संकटों और असमाजिक पूर्वाग्रहों से भी ग्रसित होता है। उपन्यास में किन्नरों के संघर्षों के साथ-साथ उनका मानवीय पक्ष भी दिखाया गया है, जैसे कि नाजबीबी का अपनी परिवार के प्रति दया और संवेदना, हालांकि समाज उसे नकारता है। इसके अलावा, उपन्यास में किन्नर समुदाय के साथ होने वाले शोषण, गलत धंधे और उनके उत्पीड़न की भी चर्चा की गई है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. यमदीप,नीरजा माधव,पृष्ठ संख्या- **250**
2. यमदीप,नीरजा माधव **(2002)** सुनील साहित्य सदन,दिल्ली |
3. यमदीप,नीरजा माधव,पृष्ठ संख्या- 82
4. वही,पृष्ठ संख्या **-95**
5. वही,पृष्ठ संख्या **-46**
6. वही,पृष्ठ संख्या **-137**
7. वही,पृष्ठ संख्या **-139**
8. वही,पृष्ठ संख्या **-12**
9. वही,पृष्ठ संख्या **-13**
10. वही,पृष्ठ संख्या **-115-116**
11. वही,पृष्ठ संख्या **-269**
12. वही,पृष्ठ संख्या **-53**